1 अर्थशास्त्र 'एक परिचय' (Economics : An Introduction)

पाठ एक झलक में (Lesson at a Glance)

- ❑ अर्थशास्त्र की अवधारणाएँ या विकास के चरण (Concepts of Economics or Stages of Development)
  - * धन सम्बन्धी विचारधारा (Wealth Concept)
  - * कल्याण सम्बन्धी विचारधारा (Welfare Concept)
  - * दुर्लभता सम्बन्धी विचारधारा (Scarcity Concept)
  - * विकास सम्बन्धी विचारधारा (Growth Concept)
- ❑ अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics)
  - * अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में (Economics as a Science)
  - * यथार्थवादी विज्ञान (Positive Science)
  - * आदर्शवादी विज्ञान (Normative Science)
  - * अर्थशास्त्र कला के रूप में (Economics as an Art)
  - * अर्थशास्त्र कला एवं विज्ञान दोनों रूप में (Economics as an Art and Science both)
- ❑ अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु (Subject matter of Economics)
  - * परम्परागत विचारधारा (Traditional Approach)
  - * आधुनिक विचारधारा (Modern Approach)
- ❑ आर्थिक एवं अनार्थिक क्रियाएँ (Economic & Non-economic Activities)
  - * आर्थिक क्रियाएँ (Economic Activities)
  - * अनार्थिक क्रियाएँ (Non-Economic Activities)
- ❑ व्यष्टिगत अर्थशास्त्र (Micro-economics)
  - * अर्थ (Meaning)
  - * परिभाषा (Definition)
  - * व्यष्टिगत अर्थशास्त्र के क्षेत्र (Scope of Micro-economics)
  - * व्यष्टिगत अर्थशास्त्र के अध्ययन के महत्व (Importance of Study of Micro-economics)
  - * व्यष्टि अर्थशास्त्र की सीमाएँ (Limitations of Micro-economics)
- ❑ समष्टि अर्थशास्त्र—एक परिचय (Macro-Economics—An Introduction)
- ● **सारांश** (Summary)
- ● **प्रश्नावली** (Questionnaries)

अर्थशास्त्र की अवधारणाएँ (Concepts of Economics)

या

अर्थशास्त्र-विकास के चरण (Economics–Stages of Development)

सामान्य अर्थों में अर्थशास्त्र एक व्यक्ति विशेष तथा समाज एवं राष्ट्र के सभी आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन है। एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र का विकास निम्न चरणों में हुआ है या अर्थशास्त्र की विभिन्न परिभाषाओं को निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) धन सम्बन्धी विचारधारा (Wealth Concept)
(2) कल्याण सम्बन्धी विचारधारा (Welfare Concept)
(3) दुर्लभता सम्बन्धी विचारधारा (Scarcity Concept)
(4) विकास सम्बन्धी विचारधारा (Growth Concept)

1. धन सम्बन्धी विचारधारा (Wealth Concept)

प्राचीन अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र के अध्ययन के मुख्य विषय धन तथा धन सम्बन्धी क्रियाएँ हैं। इन अर्थशास्त्रियों में आदम (एडम) स्मिथ, जे. बी. से, नासु विलियम सिनियर, वाकर, जे. एस. मिल प्रमुख हैं।

आदम (एडम) स्मिथ जिन्हें अर्थशास्त्र का जनक (Father of Economics) कहा जाता है, ने 1776 ई. में अपनी पुस्तक 'An Enquiry into the Nature and Causes of Wealth of Nations' में लिखा कि अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है।''

("Economics is a Science of Wealth".)

इस परिभाषा के अनुसार अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रों की सम्पत्ति की प्रकृति एवं कारणों की खोज करना है। दूसरे शब्दों में अर्थशास्त्र में केवल धनोपार्जन सम्बन्धी क्रियाओं को ही शामिल किया जाता है। आदम स्मिथ के अनुसार धन सम्बन्धी क्रियाओं का अर्थ धन के उत्पादन (Production), विनिमय (Exchange), वितरण (Distribution) एवं उपभोग (Consumption) सम्बन्धी क्रियाओं से है।

जे. बी. से के अनुसार—''अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो सम्पत्ति की विवेचना करता है।''

("Economics is the science which treats of wealth".)

वाकर के अनुसार—''अर्थशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बन्ध धन से है।''

(Economics is that body of knowledge which relates to wealt.)

अन्त में निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि प्राचीन अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र के केन्द्र बिन्दु में मुख्य रूप से धन को रखा है। अत: अर्थशास्त्र के क्षेत्र को इन अर्थशास्त्रियों ने संकुचित बना दिया है।

कल्याण सम्बन्धी विचारधारा (Welfare Concept)

मार्शल तथा उनके समकक्ष अर्थशास्त्रियों ने प्राचीन अर्थशास्त्रियों के द्वारा दी गई अर्थशास्त्र की परिभाषा के दोषों को दूर करने के लिए अर्थशास्त्र की कल्याण सम्बन्धी विचारधारा प्रस्तुत की है। इनके अनुसार, ''मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य केवल सम्पत्ति प्राप्त करना नहीं है। सम्पत्ति स्वयं कोई साध्य नहीं है अत: यह एक साध्य का साधन मात्र है और यह साध्य है मानव कल्याण।''

("Only generating the Wealth is not the final destination of economics. Wealth is not an end in itself, it is a means to an end and the end is human welfare.")

मार्शल ने अर्थशास्त्र में धन की अपेक्षा मानव तथा मानवीय कल्याण को प्रमुख स्थान दिया है।

मार्शल ने अपनी प्रमुख पुस्तक 'Principles of Economics' में अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है—

''अर्थशास्त्र जीवन में साधारण व्यवसाय में मानव के कार्यों का अध्ययन है, यह मनुष्य के उन व्यक्तिगत एवं सामाजिक कार्यों की जाँच करता है, जिनका कल्याण के भौतिक साधनों की प्राप्ति तथा उपभोग से घनिष्ठतम सम्बन्ध है।''

("Economics is a study of mankind in the ordinary business of life, it examines that part of individual and social action which is most closely connected with the attainment and with the use of the material requisites of well being.")

मार्शल के इस कल्याणवादी अर्थशास्त्र की अवधारणा का समर्थन पीगू, कैनन, बेवरीज, जे. एन. केन्स, एली आदि जैसे प्रमुख अर्थशास्त्रियों ने भी किया है।

प्रो. ए. सी. पीगू के अनुसार—''हमारी परीक्षा का क्षेत्र सामाजिक कल्याण के उस अंश तक सीमित रहता है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा रूपी मानदंड से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।''

("The range of our enquiry becomes restricted to that part of social welfare that can be brought directly or indirectly into relationship with the measuring rod of money.")

इडविन कैनन के अनुसार—''राजनीतिक अर्थशास्त्र का उद्देश्य उन सामान्य कारणों की व्याख्या करना है जिन पर मानव का भौतिक कल्याण निर्भर करता है।''

("The aim of political economy is the explanation of the general cause in which the material welfare of human beings depends.")

इस प्रकार अर्थशास्त्र का सम्बन्ध धन से अधिक मानव के भौतिक कल्याण से है।

दुर्लभता सम्बन्धी विचारधारा (Scarcity Concept)

अर्थशास्त्र के दुर्लभता सम्बन्धी विचारधारा के प्रतिपादक प्रो. लियोनल रॉबिन्स थे। उनके अनुसार अर्थशास्त्र सीमित साधनों तथा उनके वैकल्पिक प्रयोग का विज्ञान है। इनके अनुसार अभाव (Scarcity) अर्थशास्त्र का मूल आधार तथा चयन (Choice) इसकी मुख्य समस्या है।

प्रो. रॉबिन्स द्वारा 1932 में प्रकाशित पुस्तक "An Essay on the Nature and Significance of Economics Science" में अर्थशास्त्र की परिभाषा निम्न प्रकार दी है—

"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो साध्य एवं सीमित साधनों, जिनका वैकल्पिक प्रयोग होता है, के सम्बन्ध के रूप में मानव आचरण का अध्ययन करता है।"

("Economics is the science which studies human behaviour as a relationship between ends and scarce means which have alternative uses.")

इस प्रकार रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र अनन्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सीमित साधनों के वैकल्पिक प्रयोग से सम्बन्धित है, जिससे कि अधिकतम सन्तुष्टि को प्राप्त किया जा सके अर्थात् "अर्थशास्त्र का चयन का विज्ञान है।"

("Economic is the science of choice")

विकास सम्बन्धी विचारधारा (Growth Concept)

अर्थशास्त्र के विकास अवधारणा के प्रतिपादक प्रो. सैम्यूलसन थे। इस अवधारणा के अनुसार अर्थशास्त्र के अध्ययन का केन्द्र-बिन्दु केवल सीमित साधनों से असीमित आवश्यकताओं की सन्तुष्टि करने का प्रयास ही नहीं है बल्कि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत इस विषय का भी अध्ययन किया जाता है कि साधनों का विकास कैसे किया जाए ताकि भविष्य की आवश्यकताओं की भी सन्तुष्टि की जा सके।

प्रो. सैम्यूलसन के अनुसार—"अर्थशास्त्र समस्त आर्थिक साधनों द्वारा मानव की वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने का अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत दुर्लभ तथा वैकल्पिक उपभोग के योग्य साधनों द्वारा मानव एवं समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने का प्रयास किया जाता है।"

("Economics is the study of how man and society choose, with or without the use of money to employ scare productive resources, which could have alternative uses, to produce various commodities over time and distribute them for consumption now and in the future among various people and groups of society.")

इस प्रकार गतिशील आर्थिक प्रणाली की आवश्यकताओं में निरन्तर वृद्धि होती जाती है। इसलिए साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाना चाहिए। इसी के साथ साधनों का विकास भी करना चाहिए ताकि निरन्तर बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics)

अर्थशास्त्र की प्रकृति विज्ञान, कला अथवा विज्ञान एवं कला दोनों ही हो सकती हैं। अत: अर्थशास्त्र की प्रकृति को समझने के लिए सर्वप्रथम हमें विज्ञान एवं कला के अर्थों को समझना परमावश्यक है।

विज्ञान का अर्थ—किसी भी विषय के क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान कहते हैं जो वैज्ञानिक अवलोकन अन्वेषण एवं प्रयोग पर आधारित हों। अन्य शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि "किसी भी घटना विशेष के कारण एवं परिणाम के पारस्परिक सम्बन्धों को स्थापित करते हुए उस घटना विशेष का क्रमबद्ध अध्ययन ही विज्ञान है। जैसे पानी को गर्म करने पर पानी का वाष्प बनकर उड़ जाना। यहाँ पानी का गर्म होना एक कारण है तथा पानी का वाष्प बनकर उड़ जाना उसका परिणाम है।

कला का अर्थ—स्थापित नियमों एवं सिद्धान्तों के आधार पर किसी कार्य को उचित प्रणाली के आधार पर करना ही कला है। इस प्रकार नियमों एवं सिद्धान्तों को व्यावहारिक स्तर पर उतारना ही कला है जिससे कि उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

1. अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में (Economics as a science)

अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में विभिन्न आर्थिक घटनाओं के कारणों एवं परिणामों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर उनकी क्रमबद्ध व्याख्या करता है। जैसे मांग के नियम के अन्तर्गत अर्थशास्त्र हमें यह बताता है कि किसी वस्तु के मूल्य वृद्धि के होने पर उसकी मांग में कमी आती है। अब यहाँ मूल्य वृद्धि कारण है तथा मांग में कमी उसका परिणाम है। इसी प्रकार पूर्ति का नियम, उत्पत्ति ह्रास नियम, उत्पत्ति वृद्धि नियम, उपयोगिता ह्रास नियम आदि अर्थशास्त्र के विज्ञान के रूप में होने के उदाहरण हैं।

पुन: अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में भी दो प्रकार का होता है–

(i) यथार्थवादी विज्ञान (Positive Science)

(ii) आदर्शवादी विज्ञान (Normative Science)

(i) यथार्थवादी विज्ञान (Positive Science)

अर्थशास्त्र यथार्थवादी विज्ञान के रूप में वस्तु स्थिति या घटना का वास्तविक अध्ययन करता है अर्थात् अर्थशास्त्र में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि "वस्तु स्थिति या घटना विशेष क्या है।" यहाँ इस बात का अध्ययन नहीं होता कि "क्या होना चाहिए।" उदाहरण के लिए यथार्थवादी विज्ञान केवल यह बतलायेगा कि यदि विष खा लिया जाए तो इन्सान की मृत्यु हो जाएगी। यह विज्ञान यह नहीं इंगित करेगा कि विष खाना चाहिए अथवा नहीं। अर्थशास्त्र यथार्थवादी विज्ञान के रूप में इस बात का अध्ययन करता है कि किसी वस्तु के मूल्य घटने पर उसके मांग में वृद्धि होगी, परन्तु मूल्य घटना उचित है या अनुचित अथवा मांग बढ़ना उचित है या अनुचित, इस बात की व्याख्या अर्थशास्त्र में नहीं की जाती है।

एडम स्मिथ, सीनियर, केयरनेस, रॉबिन्स आदि अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र की एक यथार्थवादी विज्ञान के रूप में व्याख्या करते हैं।

(ii) आदर्शवादी विज्ञान (Normative Science)

पुन: अर्थशास्त्र एक आदर्शवादी विज्ञान के रूप में भी अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र मानव के भौतिक कल्याण में वृद्धि करने के लिए अर्थव्यवस्था में विभिन्न आदर्शों एवं सुझावों को प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र यह बताता है कि आय की असमानता को कैसे दूर किया जाए, उत्पादन में वृद्धि कैसे की जाए, बेरोजगारी कैसे दूर की जाए, राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय में कैसे सुधार हो आदि। इस प्रकार अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था, समाज, राष्ट्र एवं व्यक्तियों के सम्बन्ध में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के लिए समाधान प्रस्तुत करता है और आर्थिक कल्याण में वृद्धि करता है।

प्रो. मार्शल के अनुसार—"यदि अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण में वृद्धि के कारणों का अध्ययन नहीं करे तो यह उजाड़ एवं निष्फल होगा।"

("Economics will be barren and useless, unless it studies the cause which promote material welfare.")

हॉब्सन, हाट्रे, मार्शल, पीगू आदि अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को आदर्श विज्ञान मानते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)—अर्थशास्त्र यथार्थवादी एवं आदर्शवादी विज्ञान दोनों है। अर्थशास्त्र एक यथार्थवादी विज्ञान होने के साथ-साथ एक आदर्शवादी विज्ञान भी है, क्योंकि यह आर्थिक सिद्धान्तों के आधार पर आर्थिक घटनाओं को कारण एवं परिणामों का क्रमबद्ध अध्ययन करके मानव कल्याण में वृद्धि करने के विभिन्न उपायों का प्रस्तुतीकरण करता है।

यथार्थवादी एवं आदर्शवादी अर्थशास्त्र में अन्तर
(Differences between Positive & Normative Economics)

आधार	यथार्थवादी अर्थशास्त्र	आदर्शवादी अर्थशास्त्र
1. अर्थ	इसमें इस विषय का अध्ययन किया जाता है कि वस्तु स्थिति या घटना 'क्या है ?'	इसमें इस विषय का अध्ययन किया जाता है कि वस्तुस्थिति 'क्या होनी चाहिए ?'
2. सत्यापन	इसे वास्तविक आंकड़ों से सत्यापित किया जाता है।	इसे वास्तविक आँकड़ों के आधार पर सत्यापित नहीं किया जा सकता है।
3. सुझावात्मक	यह सुझावात्मक या परामर्शदाता के रूप में अर्थशास्त्र की व्याख्या नहीं करता है। यह तथ्यों पर आधारित नहीं होता है।	यह सुझावात्मक एवं परामर्शदाता के रूप में अर्थशास्त्र का अध्ययन है।
4. साध्य से सम्बन्ध	यह साध्यों के प्रति उदासीन है।	इसका सम्बन्ध साध्यों से है।
5. मूल्यपरक विश्लेषण	यह तथ्य आधारित विश्लेषण है।	यह मूल्य वर्द्धित विश्लेषण है।
6. उद्देश्य	इसका उद्देश्य आर्थिक क्रियाओं एवं आर्थिक समस्याओं का वास्तविक व्याख्या करना है।	इसका उद्देश्य आर्थिक क्रियाओं तथा समस्याओं का उचित समाधान स्थापित करना है।

2. अर्थशास्त्र कला के रूप में (Economics as an Art)

अर्थशास्त्र के अन्तर्गत निर्धारित/स्थापित आर्थिक नियमों एवं सिद्धान्तों को आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु व्यावहारिक रूप में लागू भी किया जाता है, जो इसके कला पक्ष को दर्शाता है। वर्तमान समय में विश्व के लगभग सभी अर्थव्यवस्थाओं में विभिन्न आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए, सामान्यत: सभी देशों द्वारा आर्थिक नियोजन का सहारा लिया जाता है, जो अर्थशास्त्र के कला पक्ष को प्रकट करता है। इसी प्रकार यदि अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी है तो अर्थशास्त्र केवल बेरोजगारी के कारणों की ही व्याख्या नहीं करता बल्कि यह भी सुझाव देता है कि बेरोजगारी दूर करने के क्या उपाय हो सकते हैं तथा उन्हें लागू कैसे किया जा सकता है जो अर्थशास्त्र के व्यावहारिक पक्ष होने का सबूत है।

प्रो. पीगू ने ठीक ही कहा है कि, "अर्थशास्त्र के अध्ययन के अन्तर्गत हमारा दृष्टिकोण एक दार्शनिक का दृष्टिकोण अर्थात् ज्ञान की खोज के लिए ज्ञान नहीं होना चाहिए वरन् हमारा दृष्टिकोण उस चिकित्सक के समान होना चाहिए जो अपने ज्ञान के द्वारा रोगियों की पीड़ा हरने का प्रयास करता है।"

("When we study, Economics our impluse is not the philosopher's impluse, knowledge for the sake of knowledge, but rather than physiologists knowledge for the heating that knowledge may help to bring.")

वे अर्थशास्त्री जो अर्थशास्त्र को कला मानते हैं उनमें एडम स्मिथ, रिकार्डो, मिल, पीगू, मार्शल, केन्स आदि के नाम प्रमुख हैं।

अर्थशास्त्र कला एवं विज्ञान दोनों रूप में (Economics as a Science and Art both)

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर हम कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र जहाँ विज्ञान के रूप में कारण एवं परिणामों का क्रमबद्ध अध्ययन कर आर्थिक सिद्धान्तों की रचना करता है, वहीं इन आर्थिक सिद्धान्तों का विभिन्न आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के लिए व्यावहारिक प्रयोग भी है। अत: हम निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र कला एवं विज्ञान दोनों ही है।

अर्थशास्त्र की विषय वस्तु (Subject matter of Economics)

अध्ययन के दृष्टिकोण से अर्थशास्त्र के विषय-सामग्री को निम्न दो भागों में बाँटा जा सकता है—

1. परम्परागत विचारधारा (Traditional Approach)—इसके अन्तर्गत अर्थशास्त्र की अध्ययन की विषय-सामग्री को निम्न पाँच शाखाओं में बांटा गया है—

(क) उपभोग (Consumption)
(ख) उत्पादन (Production)
(ग) विनिमय (Exchange)
(घ) वितरण (Distribution)
(ङ) लोक वित्त (Public Finance)

2. आधुनिक विचारधारा (Modern Approach)—इसके अन्तर्गत अर्थशास्त्र के अध्ययन में विषय-सामग्री को निम्न दो भागों में बांटा गया है—

(i) व्यष्टिगत अर्थशास्त्र (Micro Economics)
(ii) समष्टिगत अर्थशास्त्र (Macro Economics)

[नोट—उपर्युक्त सभी का विस्तृत विवेचन इसी पाठ में आगे किया गया है।]

आर्थिक एवं अनार्थिक क्रियाएँ (Economic and Non-Economic Activities)

1. आर्थिक क्रियाएँ (Economic Activities)—आधुनिक व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उन सभी क्रियाओं को आर्थिक क्रिया कहते हैं जिसका सम्बन्ध मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए सीमित साधनों के उपभोग से है। सामान्यत: मानवीय आवश्यकता को सन्तुष्ट करने के लिए आर्थिक जगत में अनेको क्रियाएँ की जाती हैं जिन्हें निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(a) उत्पादन, (b) उपभोग, (c) विनिमय, (d) वितरण।

अत: आर्थिक क्रियाओं से तात्पर्य उन क्रियाओं से है जो उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण से सम्बन्धित क्रियाओं में संलग्न होते हैं। सरल शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि आर्थिक क्रियाएँ वे सभी क्रियाएँ हैं जिनसे वैधानिक आय का सृजन तथा मानवीय

1. आर्थिक तथा गैर-आर्थिक क्रियाएँ [Economic and Non-economic Activities]

1.1. आर्थिक क्रियाएँ (Economic Activities)–हम अपने दैनिक जीवन में विभिन्न व्यक्तियों को अपनी आजीविका के लिये विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में जुटे हुए देखते हैं। ये क्रियाएँ वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन, उनके वितरण एवं विनिमय से संबंधित होती हैं। विभिन्न लोग, जैसे–कृषक, मजदूर, मोची, दुकानदार, उद्योगपति, अध्यापक, वकील, डॉक्टर, चार्टेड एकाउन्टैंट आदि विभिन्न प्रकार के कार्य सम्पन्न करते हैं। अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि करने हेतु हमें धन अर्जन करने के लिए कोई-न-कोई कार्य अवश्य करना पड़ता हैं जिसे आर्थिक क्रिया कहते हैं। संक्षेप में, धन के उत्पादन, वितरण एवं उसके उपभोग से संबंधित समस्त क्रियाएँ आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं।

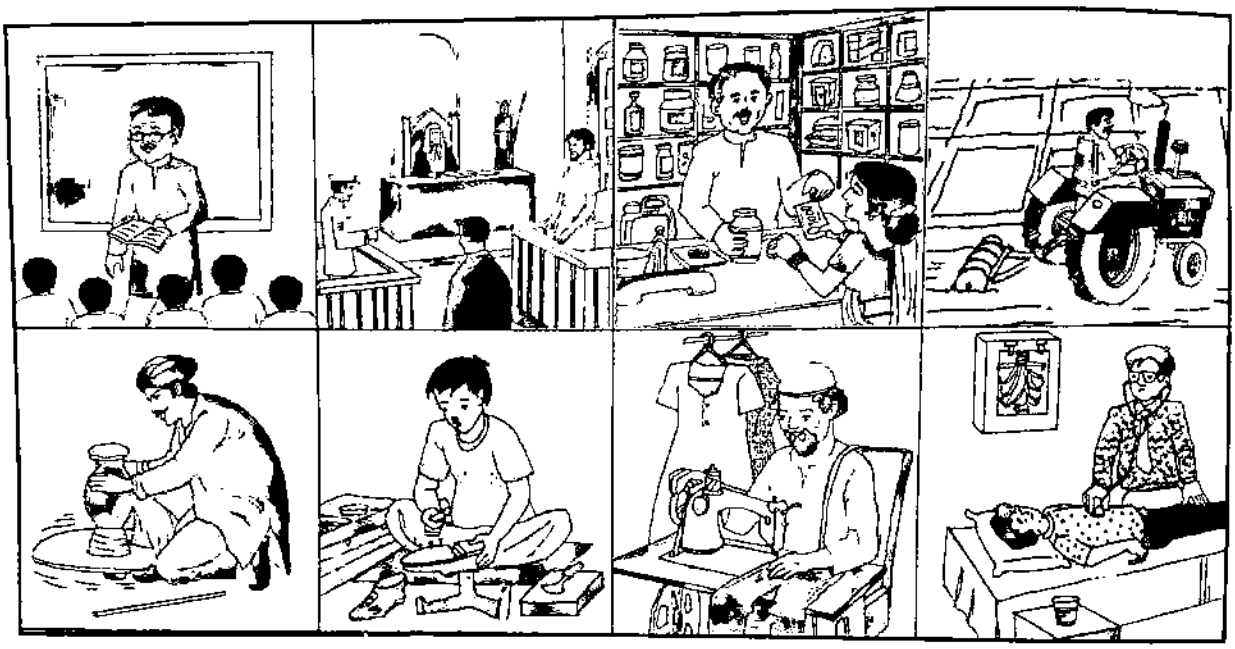

समाज में रह रहा प्रत्येक व्यक्ति अपनी आजीविका अर्जन हेतु कोई-न-कोई कार्य कर रहा है।

किसी अर्थव्यवस्था में मुख्य रूप से की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को निम्न चार भागों में विभाजित किया जा सकता है :

1. उत्पादन (Production)–उत्पादन वह क्रिया है जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य में वृद्धि होती है। उदाहरणार्थ, पूँजी एवं श्रम की सहायता से फर्नीचर बनाना।

उत्पादन *उपभोग* *विनिमय* *वितरण*

2. उपभोग (Consumption)–उपभोग अर्थव्यवस्था में घटित अन्य मूलभूत आर्थिक क्रिया है। वस्तुतः उपभोग समस्त आर्थिक क्रियाओं का आधार है। यदि वस्तुओं एवं सेवाओं का कोई उपभोग न किया जाता, तो भला उनके उत्पादन की क्या आवश्यकता

पड़ती। उपभोग से अभिप्राय आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रयोग से है। उदाहरणार्थ, प्यास बुझाने के लिए पानी पीना, भूख मिटाने के लिये भोजन करना आदि।

3. **विनिमय** (Exchange)–विनिमय का संबंध वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय-विक्रय से होता है। वस्तुओं का क्रय-विक्रय बाजार में मुद्रा के माध्यम से होता है। विनिमय के लिए कीमत निर्धारण जरूरी है। इसीलिए विनिमय को वस्तु कीमत सिद्धान्त (Product Pricing) भी कहा जाता है।

4. **वितरण** (Distribution)–वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में विभिन्न प्रकार के साधनों की आवश्यकता पड़ती है। वितरण का संबंध उत्पादन के साधनों की कीमत के निर्धारण से है। इसीलिए वितरण को साधन कीमत का निर्धारण (Factor Pricing) भी कहते हैं।

इस सन्दर्भ में ध्यान देने योग्य बात यह है कि आर्थिक क्रियाओं के अन्तर्गत उन्हीं वस्तुओं एवं सेवाओं को लिया जाता है जो एक ओर तो उपयोगी हों, वहीं दूसरी ओर दुर्लभ (Scarce) भी हों अर्थात् जिनकी पूर्ति माँग की तुलना में कम है।

आर्थिक क्रियाओं की विशेषताएँ

(*i*) आर्थिक क्रिया वस्तु अथवा सेवा के उत्पादन, उपभोग, वितरण एवं विनिमय से संबंधित क्रिया है। वस्तु अथवा सेवा में उपयोगिता एवं दुर्लभता का गुण होना चाहिए।

(*ii*) आर्थिक क्रियाएँ मुद्रा एवं धन से संबंधित होती हैं।

(*iii*) आर्थिक क्रिया का मूल उद्देश्य मानवीय आवश्यकता की संतुष्टि करना है।

(*iv*) यह धन उपार्जन हेतु किया गया मानवीय कार्य है।

अर्थशास्त्र में समस्त आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। गैर-आर्थिक क्रियाओं को इसके अध्ययन क्षेत्र से बाहर रखा जाता है।

1.2. गैर-आर्थिक क्रियाएँ (Non-economic Activities)– **गैर-आर्थिक क्रियाओं से अभिप्राय उन मानवीय क्रियाओं से है जिनका उद्देश्य धन अथवा आय का उपार्जन नहीं होता।** इन क्रियाओं का कोई आर्थिक पहलू नहीं होता। इन्हें निम्न प्रकार से श्रेणीबद्ध किया जा सकता है :

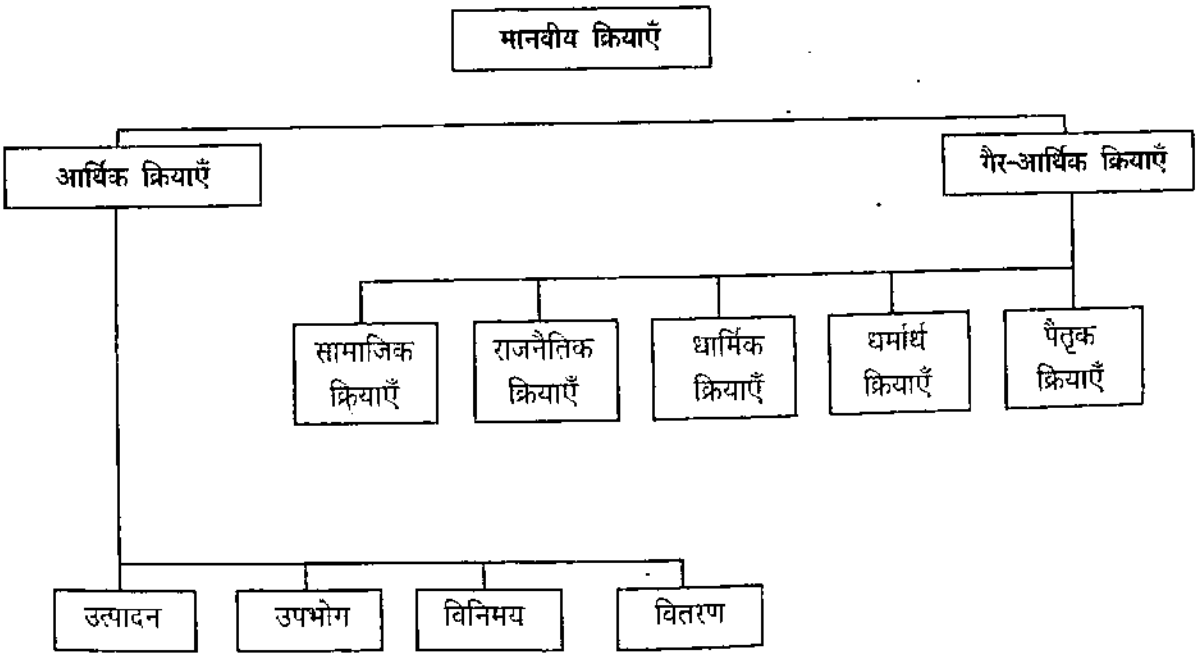

चार्ट : मानवीय क्रियाओं का वर्गीकरण

(अ) **सामाजिक क्रियाएँ**–जैसे विवाह अथवा जन्मदिन के अवसर पर आयोजित पार्टियों में भाग लेना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन आदि।

(ब) **राजनैतिक क्रियाएँ**–जैसे कांग्रेस, भा०ज०पा० आदि राजनैतिक पार्टियों द्वारा की जाने वाली क्रियाएँ।